(सद्गुरुदेव डॉ.नारायण दत्त श्रीमाली जी)

स्तोत्र शक्ति

प्रभु खिंचे हुए, बंधे हुए चले आयेंगे

# गुरु आह्वान स्तोत्र

*स्तोत्र स्वयं में मंत्र स्वरूप होते हैं-इस तथ्य से प्रत्येक साधक परिचित है किंतु मंत्रों की अपेक्षा एक अन्य विशिष्टता होती है किसी भी स्तोत्र में कि जहां मंत्र वर्णों का विशिष्ट संयोजन होता है वहीं किसी भी स्तोत्र में एक लयबद्धता भी होती है तथा इसी लयबद्धता के कारण यह सहज स्वाभाविक हो जाता है कि साधक के हृदय के भाव पूर्णता से प्रस्फुटित हो सकें। हृदय के भाव प्रस्फुटित हो सकें, यही तो समस्त साधनाओं का भी मर्म है। मात्र स्तोत्र पाठ से ही जीवन में कई प्रकार की अनुकूलताएं प्राप्त हो जाती हैं।*

यह माह है पूज्यपाद गुरुदेव के अवतरण का माह और किसी भी शिष्य के लिए यह सम्पूर्ण माह उसी प्रकार से धन्यता और पवित्रता का माह है ज्यों किसी शिव-भक्त के लिए श्रावण का माह होता है।

यह सम्पूर्ण माह गुरु साधनाओं को सम्पन्न करने का माह है और जहां गुरुदेव की साधना की जाए वहां यह आवश्यक है कि उनका सम्पूर्ण गरिमा व पवित्रता के साथ आह्वान भी किया जाए। गुरु शब्द के साथ देव शब्द जोड़ने का अर्थ ही यही है कि गुरुदेव, व्यक्ति की संज्ञा से आगे बढ़ देवत्व की विशिष्टतम स्थिति होते हैं।

शिष्यगण, पूज्यपाद गुरुदेव का आह्वान यथोचित विधि से कर सकें इस हेतु इस मास में जिस गुरु आह्वान-स्तोत्र की प्रस्तुति की जा रही है वह एक दुर्लभ स्तोत्र है। इस स्वतन के पाठ अथवा श्रवण मात्र से गुरुदेव सूक्ष्म रूप में उपस्थित होते ही हैं, यह एक अनुभव जन्य प्रमाण है अनेकानेक साधकों व शिष्यों का अतः इस स्तवन का पाठ अत्यंत भावविह्वलता, शुद्धता एवं विगलित कंठ से करें।

<u>प्रयोग-विधि</u> : जब कभी भी इस स्तवन का पाठ करने का भाव मन मे उमड़े तब शुद्ध वस्त्र धारण कर उत्तरमुख हो आसन पर बैठें, वातावरण को धूप अगरबत्ती के द्वारा सुगंधमय कर लें तथा अपने समक्ष किसी बाजोट पर वस्त्र बिछाकर पुष्प की पंखुड़ियों को गुरुदेव हेतु आसन के रूप में स्थापित करें।

सामूहिक अथवा व्यक्तिगत गुरु-पूजन/गुरु साधना के अवसर पर इस स्तोत्र का पाठ गुरुदेव का यथोचित विधि से पूजन करने के उपरान्त करें, मध्य में अथवा प्रारम्भ में नहीं– ऐसा सिद्धाश्रम गुरु-पूजन क्रम में उल्लिखित है।

मात्र परीक्षण के रूप में, किसी कौतूहल या किसी भी प्रकार से अगरिमामय रूप में इस स्तवन का पाठ करना सर्वथा वर्जित है। आगे इस स्तवन को जिस प्रकार से पूज्यपाद गुरुदेव ने स्पष्ट किया है, उसी रूप में प्रकाशित किया जा रहा है–



Scanned with CamScanner

पूर्ण सतान्यं परिपूर्ण रूपं
गुरुर्वै सतान्यं वीर्यो ववान्यम्।
आविर्वतां पूर्ण मदेव पुण्यं
गुरुर्वै शरण्यं गुरुर्वै शरण्यम्॥१॥

त्वमेव माता च... (श्लोक क्रम १६ पूरा पढ़ें)

न जानामि योगं न जानामि ध्यानं
न मंत्रं न तंत्रं योगं क्रियान्यं।
न जानामि पूर्णं न देहं न पूर्वं
गुरुर्वै शरण्यं गुरुर्वै शरण्यम्॥२॥

त्वमेव माता च...

अनाथो दरिद्रो जरा रोग युक्तो
महाक्षीण दीनः सदा जाड्य वक्त्रः।
विपत्ति प्रविष्टः सदाऽहं भजामि
गुरुर्वै शरण्यं गुरुर्वै शरण्यम्॥३॥

त्वमेव माता च...

त्वं मातृ रूपं पितृ स्वरूपं
आत्म स्वरूपं प्राण स्वरूपं।
चैतन्य रूपं देवं दिवन्त्रं
गुरुर्वै शरण्यं गुरुर्वै शरण्यम्॥४॥

त्वमेव माता च...

त्वं नाथ पूर्णं त्वं देव पूर्णं
आत्म च पूर्णं ज्ञानं च पूर्णम्।
अहं त्वां प्रपद्ये सदाऽहं भजामि
गुरुर्वै शरण्यं गुरुर्वै शरण्यम्॥५॥

त्वमेव माता च....

मम अश्रु अर्घ्यं पुष्पं प्रसूनं
देहं च पुष्पं शरण्यं त्वमेवम्।
जीवोऽ ववां पूर्ण मदेव रूपं
गुरुर्वै शरण्यं गुरुर्वै शरण्यम्॥६॥

त्वमेव माता च...

आवाहयामि आवाहयामि
शरण्यं शरण्यं सदाहं शरण्यं।
त्वं नाथ मेवं प्रपद्ये प्रसन्नं
गुरुर्वै शरण्यं गुरुर्वै शरण्यम्॥७॥

त्वमेव माता च...

न तातो न माता न बन्धुर्न भ्राता
न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न भर्ता।
न जाया न वित्तं न वृत्तिर्ममेवं
गुरुर्वै शरण्यं गुरुर्वै शरण्यम्॥८॥

त्वमेव माता च...

आवाह्य रूपं अश्रु प्रवाहं
विद्यां प्रपद्ये ह्रवयं ववान्यं।
देहं त्वमेवं शरण्यं त्वमेवं
गुरुर्वै शरण्यं गुरुर्वै शरण्यम्॥९॥

त्वमेव माता च...

गुरुर्वै शरण्यं गुरुर्वै शरण्यं
गुरुर्वै शरण्यं गुरुर्वै शरण्यम्।
एको हि नाथं एको ही शब्दं
गुरुर्वै शरण्यं गुरुर्वै शरण्यम्॥१०॥

त्वमेव माता च...

कान्तां न पूर्वं ववान्यं ववान्यं
कोऽहं सवान्यं सदाहं ववामि।
न पूर्वं पतिर्वै पतिर्वै सदाऽहं
गुरुर्वै शरण्यं गुरुर्वै शरण्यम्॥११॥

त्वमेव माता च...

न प्राणो ववार्वै न देहं नवाऽहं
न नेत्रं न पूर्वं सदाऽहं ववान्यं।
तुच्छं ववां पूर्वं मदेव तुल्यं
गुरुर्वै शरण्यं गुरुर्वै शरण्यम्॥१२॥

त्वमेव माता च...

पूर्वो न पूर्वं न ज्ञानं न तुल्यं
न नारि नरं वै पतिर्वै न पत्न्यम्।
को कत् कदा कुत्र कदेव तुल्यं
गुरुर्वै शरण्यं गुरुर्वै शरण्यम्॥१३॥

त्वमेव माता च...

गुरुर्वै शतान्यं गुरुर्वै शतान्यं
गुरुर्वै ववान्यं गुरुर्वै कथान्यम्।
गुरुमेव रूपं सदाऽहं भजामि
गुरुर्वै शरण्यं गुरुर्वै शरण्यम्॥१४॥

त्वमेव माता च...

आत्रं वतां अश्रु ववेव रूपं
ज्ञानं ववान्यं परिपूर्ण नित्यम्
गुरुर्वै प्रजाहं गुरुर्वै भजाहं
गुरुर्वै शरण्यं गुरुर्वै शरण्यम्॥१५॥

त्वमेव माता च...

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम् देव देव॥१६॥

त्वमेव माता च...



Scanned with CamScanner

सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में व्याप्त, पूर्ण स्वरूप वाले निश्चित रूप से जो सत् चित् स्वरूप हैं, अखण्ड स्वरूप हैं, संसार में आविर्भूत होने वाले सबसे अधिक पुण्यवान् हैं, ऐसे दिव्य गुणों से परिपूर्ण गुरु चरणों की मैं शरण ग्रहण करता हूं ...॥१॥

योग क्या है, मैं नहीं जानता हूं; न मैं ध्यान को जानता हूं, न मंत्र-तंत्र आदि क्रियाओं को ही जान पा रहा हूं। पूर्ण शक्ति स्वरूप ब्रह्म शक्ति को भी नहीं जानता हूं। इस शरीर के पूर्व और पश्चात की गति को भी नहीं जानता हूं। केवल मैं शरणागत हूं, यही मेरी एकमात्र चेतना है ...॥२॥

मैं अनाथ और दरिद्र हूं, जरा और रोग से ग्रस्त हूं, मैं बिल्कुल आश्रयहीन हूं तथा स्पष्ट रूप से बोल भी नहीं पाता हूं, निरन्तर विपत्तिग्रस्त हूं। आपकी आराधना करता हूं, हे गुरुदेव! आपकी शरणागत हूं, आप मेरी रक्षा करें ...॥३॥

हे गुरुदेव! आप ही मेरे माता, पिता, आत्मा और प्राण हैं। आप चैतन्य स्वरूप हैं, देवाधिदेव हैं। मैं सदैव आपकी शरणागत हूं, आप मेरी रक्षा करें ...॥४॥

हे गुरुदेव! आप पूर्ण स्वरूप हैं, देव स्वरूप हैं, आत्म स्वरूप एवं ज्ञानमय हैं, चैतन्य स्वरूप एवं दिव्य चेतनामय हैं। मैं सदैव आपकी शरणागत हूं, आप मेरी रक्षा करें ...॥५॥

हे प्रभु! मेरे अश्रुओं का अर्घ्य आपको अर्पित है, यह देह ही पुष्प है, आपके शरणागत हूं। बारम्बार देह धारण करके पूर्णता प्राप्त कर सकूं, क्योंकि मैं आपके चरण शरण हूं ...॥६॥

हे प्रभु! आप मेरे हृदय में स्थापित हों, आपका आवाहन करता हूं। हे नाथ! मेरी स्थिति से आप परिचित हैं, जीवन में मैं प्रसन्नता चाहता हूं, मुझे अपनी शरण में ले लें...॥७॥

माता, पिता, भाई तथा कोई भी सम्बन्धी इस संसार में मेरे नहीं हैं। पुत्र, पुत्री, पति तथा सेवक आदि भी नहीं हैं। पत्नी, धन या जीवनयापन के किसी भी साधन को मैं अपना नहीं मानता हूं। हे गुरुदेव! मैं आपके शरणागत हूं ...॥८॥

अजस्र प्रवाहमान अश्रु ही मेरे हृदय में स्थापित हैं, और ये ही आप के विमल स्वरूप का प्रमाण है। यह मेरा शरीर भी आप का ही है, जिसे सेवा के लिये चाहें तो आप उपयोग करें। पुनः-पुनः निवेदन है कि मैं आपकी शरण में ही रहूं ...॥९॥

मैं आपकी ही शरणागत हूं, आपके ही अधीन हूं, आप ही मेरे रक्षक हैं, पालक हैं, आपही मेरे एकमात्र आराध्य हैं, स्तुत्य हैं। आप सदा मुझे अपनी शरण में रखे रहें, ऐसी प्रार्थना करता हूं ...॥१०॥

कोई भी वस्तु इस संसार में ऐसी नहीं है, जिसकी मुझे आपके समक्ष कामना हो। मैं कौन हूं, यह भी नहीं जानता हूं। इससे पूर्व मेरा कोई स्वामी था भी या नहीं, मैं नहीं जानता हूं। मैं तो बस जानता हूं कि आप ही मेरे सर्वस्व हैं, और आपकी शरणागति की ही कामना करता हूं ...॥११॥

यह प्राण, देह तथा नेत्र आदि इन्द्रियां जिन्हें मैं अपना समझता था – ये अनित्य और तुच्छ हैं, नाशवान हैं, संसार में केवल आप ही सारभूत तत्व हैं। प्रभु! मैं आपकी ही शरण में हूं ...॥१२॥

सृष्टि की उत्पत्ति से पूर्व का मुझे कुछ भी ज्ञान नहीं है। ये नर, नारी, पत्नी और पति का भाव कैसे हुआ – यह भी नहीं जानता, मैं कौन हूं, कब से इस संसार चक्र में हूं, कब तक ऐसा चलता रहेगा, यह भी नहीं जानता, केवल आपकी शरणागत हूं, यही जानता हूं ...॥१३॥

गुरु ही गति है, गुरु ही शक्ति है, गुरु ही स्तुति योग्य है, गुरु ही कथा योग्य है, गुरु ही दर्शन योग्य है, उनका ही मैं सदा स्मरण करता हूं, उन्हीं की शरणागत चाहता हूं ...॥१४॥

मैं आर्त हूं, आंखों में अश्रु हैं, मैं प्रार्थना कर रहा हूं कि आपके स्वरूप का मुझे ज्ञान हो, मैं पूर्णता प्राप्त करूं, गुरु का ही भजन करूं, और एकमात्र उनकी शरण में रहूं ...॥१५॥

गुरुदेव! आप ही माता, पिता, बन्धु, सखा, विद्या और धन आपसे अलग न मेरा कोई भाव है और न मैं चाहता हूं, इसी रूप में आप मुझे पूर्णता प्रदान करें। हे प्रभु! आप ही मेरे सर्वस्व हैं, सर्वस्व हैं ...॥१६॥

*सिद्धाश्रम प्रणीत यह स्तोत्र, मात्र एक स्तवन भर नहीं है। यह स्वयं में पूज्यपाद सद्गुरुदेव को सूक्ष्म रूप में उपस्थित कर लेने का प्राणों से किया गया एक आह्वान है, अतः इसका पठन-पाठन पूर्ण मर्यादा से किया जाना आवश्यक है। यूं भी कभी मस्ती में, बिस्तर में लेटे-लेटे, रास्ते चलते, बाथरूम में नहाते समय इसका उच्चारण किसी गीत की भांति करना अभद्र है और ऐसा करना विपरीत फलदायक भी हो सकता है। शिष्यगण इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखें।*



Scanned with CamScanner

## श्री गुरुपादुका पंचकम्

ॐ नमो गुरुभ्यो गुरुपादुकाभ्यो
नमः परेभ्यः परपादुकाभ्यः ।
आचार्यसिद्धेश्वरपादुकाभ्यो
नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्यः ।।१।।

मैं पूज्य गुरुदेव को प्रणाम करता हूं, मेरी उच्चतम भक्ति गुरु के चरणों और उनकी पादुका के प्रति है, क्योंकि गंगा-यमुना आदि समस्त नदियां और संसार के समस्त तीर्थ उनके चरणों में समाहित हैं, यह पादुकाएं ऐसे चरणों से आप्लावित रहती हैं, इसीलिए मैं इन पादुकाओं को प्रणाम करता हूं, यह मुझे भवसागर से पार उतारने में सक्षम हैं, यह पूर्णता देने में सहायक हैं, ये पादुकाएं आचार्य और सिद्ध योगी के चरणों में सुशोभित रहती हैं, और ज्ञान के पुंज को अपने ऊपर उठाया है, इसीलिए ये पादुकाएं ही सही अर्थों में सिद्धेश्वर बन गई हैं, इसीलिए मैं इन गुरु पादुकाओं को भक्ति भाव से प्रणाम करता हूं ।

ऐंकार ह्रींकाररहस्ययुक्त
श्रींकारगूढार्थमहाविभूत्या ।
ओम्कारमर्मप्रतिपादिनीभ्यां
नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ।।२।।

गुरुदेव "ऐंकार" रूप युक्त हैं, जो कि साक्षात् सरस्वती के पुंज हैं, गुरुदेव "ह्रींकार" युक्त हैं, एक प्रकार से देखा जाय तो वे पूर्णरूपेण लक्ष्मी युक्त हैं, मेरे गुरुदेव "श्रींकार" युक्त हैं, जो संसार के समस्त वैभव, सम्पदा और सुख से युक्त हैं, जो सही अर्थों में महान विभूति हैं, मेरे गुरुदेव "ॐ" शब्द के मर्म को समझाने में सक्षम हैं, वे अपने शिष्यों को भी उच्च कोटि की साधना सिद्ध कराने में सहायक हैं, ऐसे गुरुदेव के चरणों में लिपटी रहने वाली ये पादुकाएं साक्षात् गुरुदेव का ही विग्रह हैं, इसीलिए मैं इन पादुकाओं को श्रद्धा-भक्ति युक्त प्रणाम करता हूं ।

होत्राग्निहौत्राग्निहविष्यहोतृ-
होमादिसर्वाकृतिभासमानं ।
यद् ब्रह्म तद्बोधवितारिणीभ्यां
नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ।।३।।

ये पादुकाएं अग्नि स्वरूपा हैं, जो मेरे समस्त पापों को समाप्त करने में समर्थ हैं, ये पादुकाएं मेरे नित्य प्रति के पाप, असत्य, अविचार और अचिन्तन से युक्त दोषों को दूर करने में समर्थ हैं, ये अग्नि की तरह हैं, जिनका पूजन करने से मेरे समस्त पाप एक क्षण में ही नष्ट हो जाते हैं, इनके पूजन से मुझे करोड़ों यज्ञों का फल प्राप्त होता है, जिसकी वजह से मैं स्वयं ब्रह्म स्वरूप हो कर ब्रह्म को पहिचानने की क्षमता प्राप्त कर सका हूं, जब गुरुदेव मेरे पास नहीं होते, तब ये पादुकाएं ही उनकी उपस्थिति का आभास प्रदान कराती रहती हैं, जो मुझे भवसागर से पार उतारने में सक्षम हैं, ऐसी गुरु पादुकाओं को मैं पूर्णता के साथ प्रणाम करता हूं ।

कामादिसर्पव्रजगारुडाभ्यां
विवेकवैराग्यनिधिप्रदाभ्यां ।
बोधप्रदाभ्यां द्रुतमोक्षदाभ्यां
नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ।।४।।

मेरे मन में काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार के सर्प विचरते ही रहते हैं, जिसकी वजह से मैं दुखी हूं, और साधनाओं में मैं पूर्णता प्राप्त नहीं कर पाता, ऐसी स्थिति में गुरु पादुकाएं गरुड़ के समान हैं, जो एक क्षण में ही ऐसे कामादि सर्पों को भस्म कर देती हैं, और मेरे हृदय में विवेक, वैराग्य, ज्ञान, चिन्तन, साधना और सिद्धियों का बोध प्रदान करती हैं, जो मुझे उन्नति की ओर ले जाने में समर्थ हैं, जो मुझे मोक्ष प्रदान करने में सहायक हैं, ऐसी गुरु पादुकाओं को मैं भक्ति सहित प्रणाम करता हूं ।

अनंतसंसारसमुद्रतार
नौकायिताभ्यां स्थिरभक्तिदाभ्यां ।
जाड्याब्धिसंशोषणवाडवाभ्यां
नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ।।५।।

यह संसार विस्तृत है, इस भवसागर को पार करने में ये पादुकाएं नौका की तरह हैं, जिसके सहारे मैं इस अनन्त संसार सागर को पार कर सकता हूं, जो मुझे स्थिर भक्ति देने में समर्थ हैं, मेरे अन्दर अज्ञान की घनी झाड़ियां हैं, उसे अग्नि की तरह जला कर समाप्त करने में सहायक हैं, ऐसी पादुकाओं को मैं भक्ति सहित प्रणाम करता हूं ।

Scanned with CamScanner

# गुरु स्तोत्र

जीवात्मानं परमात्मानं दानं ध्यानं योगी ज्ञानम्।
उत्कल काशी गंगा मरणं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम्॥१॥

प्राणं देहं गेहं राज्यं स्वर्गं भोगं योगं मुक्तिम्।
भार्यामिष्टं पुत्रं मित्रं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम्॥२॥

वान प्रस्थं यति विधि धर्म पारमहंस भिक्षुक चरितम।
साधोः सेवां बहु सुख भुक्त्वा न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम्॥३॥

विष्णो भक्तिं पूजन रक्तिं वैष्णव सेवां मातरि भक्तिम्।
विष्णोरिव पितृ सेवन योगं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम्॥४॥

प्रत्याहारं चेन्द्रिय यमनं प्राणायामं न्यास विधानम्।
इष्टे पूजा जप तप भक्तिर्न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम्॥५॥

काली दुर्गा कमला भुवना त्रिपुरा भामा बगला पूर्णा।
श्री मातंगी धूमा तारा न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम्॥६॥

मात्स्यं कौर्मं श्रीवाराहे नरहरि रूपं वामन चरितम्।
नर नारायण चरितं योगं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम्॥७॥

श्री भृगुदेवं श्रीरघुनाथं श्रीयदुनाथं बौद्धं कल्क्यम्।
अवतारा दश वेद विधानं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम्॥८॥

गंगा काशी कांची द्वारा मायायोध्यावन्ती मथुरा।
यमुना रेवा पुष्कर तीर्थं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम्॥९॥

गोकुल गमनं गोपुर रमणं श्री वृंदावन मधुपुर रटनम्।
एतत् सर्वं सुन्दरि! मातर्नगुरोरधिकं न गुरोरधिकम्॥१०॥

तुलसी सेवा हरिहरि भक्तिः गंगा सागर संगम मुक्तिः।
परममधिकं कृष्णे भक्तिर्न गुरोरधिक न गुरोरधिकम्॥११॥

एतत् स्तोत्रं पठति च नित्यं मोक्ष ज्ञानी सोऽपि च धन्यम।
ब्रह्माण्डान्तर्यद् यद् ध्येयं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम्॥१२॥



Scanned with CamScanner